B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Causes and effects of the Russian Revolution(PPT)

Prepared by : Sri Pinku kumar
Asst. Professor (Dept. of History)
B.N. College Bhagalpur
Contact (whatsApp) no- 7982166260
Email id- kpinku348@gmail.com

रुसी क्रांति : कारण एवं प्रभाव

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

❖ 1917 की रूसी क्रांति, रूस की पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था, किसानों और मजदूरों की विपन्नता, जारशाही की निरंकुशता,जन विद्रोह की परंपरा, सरकार में मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने की इच्छा का अभाव तथा समाजवादी विचारधारा के प्रसार का सम्मिलित परिणाम थी।

❖रूसी क्रांति के कई कारण थे जिसे हम निम्न शीर्षकों में बांट कर अध्ययन कर सकते हैं-

जार का निरंकुश व स्वेच्छाचारी शासन

❖19वीं शताब्दी में लगभग समस्त यूरोप में महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन हो रहे थे। यूरोप में अब अधिकतर देश फ्रांस की तरह गणतंत्र थे या इंग्लैंड की तरह संवैधानिक राजतंत्र। किंतु रूस में अब भी जारों का स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश शासन कायम था।

❖निकोलस द्वितीय(1894- 1917) जिसके शासनकाल में क्रांति हुई, राज्य के दैवी अधिकारों में विश्वास रखता था। निरंकुशता को बनाए रखना वह अपना पवित्र कर्तव्य समझता था।

जार का निरंकुश व स्वेच्छाचारी शासन-1

- उसने प्रगतिशील प्रवृत्तियों के विरुद्ध घोर दमन की नीति अपनाई। प्रेस की स्वतंत्रता नहीं थी, रूसी नागरिकों को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे एवं बौद्धिक गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण था। उसे केवल अभिजात्य वर्ग और उच्च पादरियों का ही समर्थन प्राप्त था।
- विशाल रूसी साम्राज्य की शेष जनसंख्या उनके विरुद्ध थे। ऐसी स्थिति में रूस के जारशाही की निरंकुशता जनता के लिए असहनीय हो रही थी और वह जारशाही के विरुद्ध संगठित होने लगी।

कृषकों की हीनदशा

- रूस एक कृषि प्रधान देश था और वहां जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग कृषक ही था। लेकिन उनकी स्थिति काफी दयनीय थी।
- अभी भी 67% भूमि कुलीन जमींदारों के हाथों में एवं 13% भूमि चर्च एवं धार्मिक पुजारियों के अधिकारों में थी। बहुसंख्यक किसान भूमिहीन थे और इन भूमिहीनों को जमींदारों की भूमि पर कार्य करना पड़ता था जिसकी शर्तें असंतुलित एवं एकपक्षीय थी। जमींदार, किसानों से बेगार करवाते थे जिसे‘कोरवी’ के नाम से जाना जाता था।

कृषकों की हीनदशा-1

❖हालांकि एलेग्जेंडर द्वितीय द्वारा 1861 ई. में कृषि दासों की मुक्ति की घोषणा की गई थी किंतु उसके बावजूद किसानों की दशा में कोई गुणात्मक सुधार नहीं
आया। किसान खेती के उन्नत तरीके
अपनाने में असमर्थ था क्योंकि उसके पास अपने भरण-पोषण एवं सरकारी व जमीनदारी भागों को पूरा करने के बाद अधिशेष पूंजी का अभाव था।

❖अत: पुरातन तरीकों से की जाने वाली खेती से इनकी दशा और भी दयनीय हो गई थी। ऐसी स्थिति में किसानों में असंतोष व्याप्त था और क्रांतिकारी समाजवादी दल ने कृषकों की स्थिति का लाभ उठाकर इन्हें शासन के विरुद्ध खड़ा किया।

मजदूरों की दयनीय दशा

❖रूस में औद्योगिकरण की स्थिति देर से आए अर्थात 19 वी सदी के उत्तरार्ध में औद्योगिकरण आरंभ हुआ. इस औद्योगिकरण के लिए पूंजी प्राय: विदेशों से आई और विदेशी पूंजीपतियों ने मुनाफे को प्रमुखता दे, मजदूरों के हितों को नजरअंदाज किया।

मजदूरों की दयनीय दशा-1

- ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त भुखमरी और बेरोजगारी से मुक्ति की तलाश में लोग शहरों की ओर उद्योगों में काम करने पहुंचे। श्रमिकों की भीड़ ने उनके परिश्रम का मूल्य कम कर दिया। न्यूनतम मजदूरी के बदले अधिकतम काम लेने की प्रवृत्ति उद्योगपतियों में बहुत बढ़ गई थी।
- श्रमिकों के कार्य करने के घंटे निश्चित नहीं थे, मजदूरी भी निश्चित नहीं थी एवं शारीरिक क्षतिपूर्ति की तो कोई प्रावधान ही नहीं था। श्रमिकों के आवास, सफाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन इत्यादि के कोई उचित व्यवस्था नहीं थी।
- कुल मिलाकर उनकी कार्य दशाएं अत्यंत दयनीय थी और उनमें असंतोष व्याप्त था।

भ्रष्ट नौकरशाही

- रूस के जारों ने जिस नौकरशाही की स्थापना की थी वह अकुशल व भ्रष्ट थी। उच्च पदों पर कुलीन वर्ग अर्थात सामंत, जमींदार को नियुक्त किया जाता था, जो स्वयं भी स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासन में विश्वास रखते थे। नौकरशाही वंशानुगत स्वरूप लिए हुए थी। इस भ्रष्ट एवं अयोग्य नौकरशाही ने जनता को और भी आक्रोशित कर दिया।

सामाजिक एवं आर्थिक असमानता

- रूसी समाज मुख्यतः दो असमान वर्गों में विभाजित था-प्रथम विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग जिसमें सामंत, कुलीन, भू-स्वामी, तथा बड़े पूंजीपति शामिल थे, दूसरा अधिकारविहीन वर्ग था जिसमें किसान, मजदूर, मध्यम वर्ग, शिक्षक, बुद्धिजीवी इत्यादि सम्मिलित थे।
- प्रथम वर्ग संपन्न था और जार की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता का समर्थक था। उत्पादन के साधनों तथा भूमि, खान और कारखाने इसी वर्ग के हाथों में थे। जबकि इसकी संपन्नता किसान और मजदूर के परिश्रम से थे।
- अतः अधिकार विहीन वर्गों में उच्च वर्ग के विरुद्ध घृणा का भाव व्याप्त हो गया। यह वर्ग उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करने के पक्ष में था।
- इसी सामाजिक-आर्थिक विषमता के कारण ही वर्ग संघर्ष उत्पन्न हुआ और रुसी क्रांति का आधार तैयार किया।

समाजवादी विचारधारा का विकास

- रूस में औद्योगीकरण शुरू होने पर मजदूर संगठनों की स्थापना हुई। साथ ही यूरोप में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरुप समाजवादी विचारधारा अस्तित्व में आई।
- रूस में औद्योगिक क्रांति के पश्चात समाजवादी विचारधारा का प्रचार होने लगा। फलस्वरूप 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी'(1898) तथा 'सोशलिस्ट रिवॉल्यूशनरी पार्टी'(1902) की स्थापना हुई। 'सोशलिस्ट रिवॉल्यूशनरी पार्टी' किसानों को संगठित कर क्रांति लाना चाहता था जबकि 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' सर्वहारा वर्ग को क्रांति का मुख्य आधार मानता था, कृषक को नहीं।
- सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी भी 1903 ई. में दो भागों में विभाजित हो गया- 'बोल्शेविक' जो बहुमत में था और 'मेनशेविक' जो अल्पमत में था।
- इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित मजदूर एवं किसानों के संगठन रूस की क्रांति का एक महान कारण साबित हुआ।

बौद्धिक कारण- बुद्धिजीवियों का योगदान

- उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से रूस की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना पर तीखी टिप्पणी होने लगी। इससे रूस में एक नई चेतना का विकास हुआ।
- इस समय टॉलस्टॉय, तुर्गनेव, मैक्सिम, गोर्की आदि जैसे उच्च कोटि के उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के लेखकों ने बौद्धिक चेतना को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।
- टॉलस्टॉय ने 'वार एंड पीस' के माध्यम से रूसी जनता में गौरव की भावना भरी। इस पुस्तक में उसने नेपोलियन द्वारा रूस पर आक्रमण और रूस में नेपोलियन के पराभव का उल्लेख किया है। गोर्की जो स्वयं बोल्शेविक दल का सदस्य रहा, ने 'मदर' नामक कृति की रचना की।
- इसीप्रकार अन्य सभी बुद्धिजीवियों ने अपने लेखन से भ्रष्ट शासन को उजागर किया तथा लोगों को इस संदर्भ में जागरूक किया।

जापान से पराजय तथा 1905 की क्रांति

- 1905 के ऐतिहासिक रूस- जापान युद्ध में रूस बुरी तरह पराजित हुआ। इससे पूर्व निरंकुश जारशाही अपनी विभिन्न मोर्चों पर विफलताओं को रूसी जनता से छुपाती रही थी। लेकिन उसके लिए सुदूर पूर्व की ओर से पराजय को जनता से छिपाना मुश्किल था। इस पराजय से रूस का महानता का भ्रम टूट चुका था। रूस एशिया के एक छोटे से देश से पराजित हुआ था। वस्तुतः इस पराजय के कारण 1905 की क्रांति हुई।
- 9 जनवरी,1905 के दिन सेंटपीटर्सबर्ग की सड़कों पर मजदूरों का शांतिपूर्ण जुलूस जार के राजमहल की ओर प्रस्थान कर रहा था। शाही सेना ने मजदूरों के जुलूस पर गोलियों चलायी गयीं, जिससे हजारों मजदूर मारे गए। इस घटना से देशभर में जारशाही के विरुद्ध असंतोष की लहर पैदा कर दी। जार को मध्यमवर्ग की मांग स्वीकार करके ड्यूमा(संसद) की बैठक बुलानी पड़ी परंतु थोड़े दिन बाद ही जार ने प्रतिनिधि सभा को भंग कर दिया और पुनःअपना निरंकुश शासन कायम कर लिया।
- यद्यपि 1905 की क्रांति विफल रही लेकिन इस क्रांति के कुछ अच्छे परिणाम भी निकले। इसने रूस की जनता को राजनीतिक अधिकारों से परिचित करा दिया। वस्तुतः सन 1905 ई. की क्रांति सन 1917 ई. की बोल्शेविक क्रांति का पूर्वाभ्यास सिद्ध हुई।

तात्कालिक कारण- प्रथम विश्व युद्ध में रूस की भागीदारी

- जार निकोलस द्वितीय की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा ने रूस को प्रथम विश्व युद्ध में उलझा दिया। वस्तुतः 1914 ई. में मित्र राष्ट्रों की ओर से उसने भागीदारी निभाई। यह कदम घातक साबित हुआ और इससे रूसी निरंकुश राजतंत्र का अंतिम तौर पर विघटन हो गया। जार का शासन आधुनिक युद्ध करने में सक्षम नहीं थी।
- रूस की नौकरशाही भ्रष्ट और रिश्वतखोरी थी। इस कारण मोर्चे पर लड़ते हुए सैनिकों को न तो अच्छे हथियार प्राप्त हो रहे थे और न तो उन्हें पर्याप्त भोजन ही मिलता था। 1915 से ही रसद की कमी होने लगी।
- शासन के भ्रष्ट और अयोग्य पदाधिकारी युद्ध के लिए एकत्र की जाने वाली धनराशि को नष्ट कर रहे थे। इसलिए युद्धोपयोगी सामाग्री के आभाव के कारण रुसी सैनिक मारे जा रहे थे। यह स्थिति क्रांति के लिए पूर्णतया अनुकूल थी। रुसी फ़ौज चारों ओर से हारने लगी। उनमें राजद्रोह की भावना घर कर गयी।

फरवरी/मार्च 1917 की क्रांति एवं निरंकुश राजतंत्र का अंत

- एक तरफ रूसी सेना की पराजय हो रही थी और दूसरी तरफ देश में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। क्योंकि कृषकों को कृषि के काम से हटाकर युद्ध के मैदान में भेज दिया गया जिससे अनाज के वार्षिक उत्पादन में भारी कमी पड़ गई। इसके कारण निर्धन लोगों के लिए जीवन निर्वाह असंभव हो गया। 7 मार्च, 1917 को पेट्रोग्रेड(सेंटपिट्सबर्ग) की सड़कों पर किसान व मजदूरों ने जुलूस निकाला। उन्होंने 'रोटी दो' की आवाज लगाई भीड़ ने पेट्रोग्रेड के होटलों और दुकानों को लूटना शुरू कर दिया और स्थिति काबू से बाहर होने लगी। किंतु सेना ने भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर दिया और वह भी मजदूरों से जा मिला।
- मजदूरों और सैनिकों ने मिलकर 'क्रांतिकारी सोवियत परिषद' का गठन किया। शासन के वास्तविक अधिकार इस परिषद ने अपने हाथ में ले लिए और ड्यूमा के सदस्यों के साथ मिलकर अस्थायी सरकार गठित की।
- ड्यूमा के समाजवादी क्रांतिकारी दल के नेता एलेक्जेंडर करेंस्की ने अंततः मंत्रिमंडल का गठन किया। इसी के साथ रूस में 300 वर्षों से शासन कर रहे रोमानोव राजवंश का अंत हो गया।

अक्टूबर/नवंबर 1917 की क्रांति- बोल्शेविक क्रांति

- करेंस्की के नेतृत्व में बनी अस्थायी सरकार में मुख्यतः जमींदार, उद्योगपति, पूंजीपति आदि शामिल थे। इस सरकार का मुख्य उद्देश्य जनतांत्रिक एवं वैधानिक सरकार की स्थापना करना, मित्र राष्ट्रों के सहयोग से युद्ध चलाना, व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार की रक्षा करना एवं रूस की समस्त संस्थाओं में वैधानिक उपायों द्वारा परिवर्तन लाना था।
- परंतु बोल्शेविकों ने इस सरकार को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उनके अनुसार यह परिवर्तन पर्याप्त नहीं थे।
- यद्यपि बोल्शेविक मार्च की क्रांति में सम्मिलित थे और किसान व मजदूर अर्थात सर्वहारा की सत्ता को स्थापित करना चाहते थे। लेनिन सारी सत्ता 'सोवियत' (किसान और मजदूरों के सहकारी संगठन) को हस्तांतरित करने का नारा दिया।
- लेनिन और बोल्शेविकों की मांग थी कि रूस प्रथम विश्व युद्ध से हट जाए, उद्योगों पर मजदूरों का नियंत्रण हो और जोतने वाले को जमीन दे दी जाए। अस्थायी सरकार युद्ध रोकने के पक्ष में नहीं थे।

अक्टूबर/नवंबर 1917 की क्रांति- बोल्शेविक क्रांति-1

- अस्थायी सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण मजदूरों और किसानों में असंतोष काफी बढ़ गया। मजदूर और सैनिकों की भीड़ ने पेट्रोगार्ड की सड़कों पर निकलकर सारी सत्ता सोवियतों को सौंपने की मांग की। परंतु करेंस्की ने इन शांतिपूर्ण जुलूस पर गोलियां चलवायी।
- बोल्शेविकों के नेता जब लेनिन ने देखा कि किसान, मजदूर और सैनिक क्रांति के पक्ष में हैं तो उसने 25 अक्टूबर, 1917 को क्रांति की घोषणा की जिसके पश्चात बोल्शेविकों ने पेट्रोगार्ड की सरकारी इमारतों, रेलवे स्टेशनों, डाग-तार घरों, बैंकों पर अधिकार कर लिया।
- 26 अक्टूबर 1917 को बोल्शेविकों ने जार के भूतपूर्व महल जहां अस्थायी सरकार कार्यरत थी पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। उसी दिन बोल्शेविकों ने घोषणा की कि अंतरिम सरकार को समाप्त कर दिया गया है तथा लेनिन के नेतृत्व में 'काउंसिल ऑफ पीपुल्स कॉमिसार' (जन मंत्रिमंडल) का गठन किया गया। इस प्रकार लेनिन के नेतृत्व में अक्टूबर/नवंबर 1917 को रूस की बोल्शेविक क्रांति सफल हुई।

रूसी क्रांति के परिणाम/प्रभाव/महत्व

- 1917 की रूसी क्रांति का प्रभाव न केवल रूस पर पड़ा बल्कि इस क्रांति ने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया, जिसे हम निम्न शीर्षकों के अंतर्गत देख सकते हैं -

राजनीतिक परिणाम

- जारशाही की समाप्ति- रूसी क्रांति ने निरंकुश और प्रतिक्रियावादी जारशाही को सदैव के लिए दफना दिया और किसान, मजदूरों के नेतृत्व में समाजवादी शासन व्यवस्था की स्थापना की गयी।
- अनेक राजवंशों का पतन- बोल्शेविक क्रांति ने रूस में चले आ रहे पिछले 300 वर्षों से स्थापित रोमानोव राजवंश का अंत कर दिया। इतना ही नहीं इस क्रांति की सफलता ने यूरोप में जो राजनीतिक चेतना उत्पन्न की, इससे राजतंत्र विरोधी भावनाएं और अधिक प्रबल हो गई। जिसके कारण अनेक राजवंशों का अंत हो गया जैसे -ऑस्ट्रिया-हंगरी में हैप्सबर्ग राजवंश, जर्मनी में होहेनजोलर्न राजवंश, टर्की में खलीफा की सत्ता की समाप्ति आदि।

राजनीतिक परिणाम-1

- **प्रथम विश्व युद्ध से रूस का हटना-** प्रथम विश्व युद्ध रूस की क्रांति का तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ था। युद्ध के दौरान रूस में फैली अव्यवस्था और आर्थिक बोझ ने जनता को बेहाल कर दिया। फलतः बोल्शेविक सरकार ने जर्मनी के साथ संधि कर रूस को युद्ध से अलग कर दिया।
- **साम्यवादी विचारधारा का प्रचार-** 1917 की बोल्शेविक क्रांति की सफलता ने मार्क्सवादी विचारधारा को साकार रूप प्रदान किया। अतः इस सफलता से पूरे विश्व में सामाजवादी विचारधारा का प्रसार तेजी से हुआ।
- **औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से मुक्ति संघर्ष में वृद्धि-** बोल्शेविक क्रांति ने साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन को न केवल प्रेरित किया बल्कि उनका खुला समर्थन भी किया। भारत सहित एशिया और अफ्रीका के लगभग सभी उपनिवेशों में सोवियत संघ को अपना स्वाभाविक मित्र और समर्थक समझा जाने लगा।
- **विश्व का दो वैचारिक गुटों में बंटना-** बोल्शेविक क्रांति से पूर्व विश्व में राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद का बोलबाला था और यही विश्व की गुटबंदी का आधार था। रूस में समाजवादी सरकार की स्थापना से पूंजीवादी विचारधारा को ठेस लगी और अब इन दोनों विचारधाराओं के प्रसार और विरोध को लेकर विश्व प्रायः दो गुटों में विभाजित हो गया।

आर्थिक परिणाम

- **आर्थिक समानता का जन्म-** क्रांति के पश्चात स्थापित समाजवादी व्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन के साधनों जैसे-कारखानों, भूमि आदि का सामाजीकरण हो गया। जमींदारों, कुलीनो,सामंतों एवं पूंजीपतियों का आर्थिक विशेषाधिकार समाप्त हो गया।
- **रूस का आर्थिक व औद्योगिक विकास-** नई समाजवादी रूसी सरकार ने पूंजीवादी देशों से बिना कोई आर्थिक और तकनीकी सहायता के अपने देश का आर्थिक व औद्योगिक विकास किया।
- **किसानों एवं मजदूरों के जीवन स्तर में सुधार-** क्रांति के पश्चात श्रमिकों एवं किसानों के जीवन स्तर में सुधार के लिए अनेक कदम उठाए गए। उन्हें बिचौलिए के चंगुल से मुक्त कर श्रम के अनुपात में वेतन की सुविधा उपलब्ध करायी गयी। इसके परिणामस्वरूप उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ।

सामाजिक परिणाम

- **वर्ग भेद की समाप्ति-** क्रांति के पश्चात रूसी समाज में कुलीन एवं अभिजात्य वर्ग के विशेषाधिकार समाप्त हो गए। किसान एवं मजदूरों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। कुल, लिंग, नस्ल, धर्म और जाति का भेद किए बिना रूस के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिया गया।
- **धर्मनिरपेक्षता का बढ़ावा-** क्रांति के पश्चात रूस में सभी धर्मों को समानता का दर्जा दिया गया। राज्य का धर्म में कोई हस्तक्षेप नहीं रहा। यह प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करने लगा कि वह इच्छानुसार किसी भी धर्म का पालन कर सकता है।
- **शिक्षा का विकास-** क्रांति के पश्चात शिक्षा से धर्म का नियंत्रण समाप्त हुआ एवं शिक्षा में धर्मनिरपेक्ष एवं वैज्ञानिक मूल्य समाहित हुए। नई व्यवस्था के अंतर्गत समाजोपयोगी शिक्षा का विस्तार हुआ।
- **महिलाओं की स्थिति में सुधार-** रूसी महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ। अधिक से अधिक संतान पैदा करने वाली रूसी महिलाओं को विशेष रूप से सम्मानित किया जाने लगा। क्योंकि उनके इस योगदान से रूसी श्रमिक और किसानों की आबादी तेजी से बढ़ रही थी। मताधिकार, शिक्षा एवं रोजगार क्षेत्र में उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिए गए।